

डॉ. डेव मैथ्यूसन ~~ए~~ रहस्योद्घाटन ~~ए~~ व्याख्यान ~~ए~~ रहस्योद्घाटन ~~ए~~ और D

© 2024 डेव मैथ्यूसन और टैड हलिडेब्रांट

यह रहस्योद्घाटन की पुस्तक पूरे अपने पाठ्यक्रम में डॉ. डेव मैथ्यूसन हैं। यह सत्र 9 है, प्रकाशतिवाक्य 4 और 5 जारी है।

वभिन्न तरीकों से हम 24 बुजुर्गों को समझ सकते हैं, मेरी राय में, जिन चार वकिलों का हमने सर्वेक्षण किया, उनमें से स्वर्गदूत प्राणी 1 इतिहास के पुजारियों के 24 पाठ्यक्रमों पर आधारित थे, स्वर्ग में चर्च को घटनाओं से पहले हटा दिया गया था या हटा दिया गया था। अध्याय 4-22, चर्च में इजराइल के स्वर्गीय प्रतिनिधियों के रूप में 24 बुजुर्ग, और स्वर्गदूत प्राणी जो स्वर्गीय दरबार से संबंधित हैं।

इनमें से, मुझे किसी एक को सटीक रूप से बताना कठिन लगता है। मुझे आश्चर्य है कि अगर शायद नंबर एक और नंबर तीन का संयोजन, शायद चार भी, तो मुझे चार को बाहर करना मुश्किल होगा, एक स्वर्गीय अदालत का विचार, विशेष रूप से यशायाह 24-23 में बड़ों के उल्लेख के साथ संबंध, लेकिन वह किसी भी स्थिति में, ये देवदूत प्राणी होंगे जो भगवान की पूजा करते हैं और जो पृथ्वी पर भगवान के लोगों के स्वर्गीय प्रतिनिधियों के रूप में कार्य करते हैं। इसके अलावा, अध्याय चार और अध्याय पांच में जो चल रहा है उसमें एक और दलिचस्प मोड़ भी है।

यह दलिचस्प है, और इससे हमें 24 बुजुर्गों के लिए एक पृष्ठभूमि प्रदान करने में भी मदद मिल सकती है। दलिचस्प बात यह है कि रोमन दुनिया के संदर्भ में सम्राट को चतुरिती करने वाली कुछ छवियाँ और साहित्य में, सम्राट को अक्सर लक्टेर्स के साथ वर्णित किया गया है, या नकिटतम चीज मूल रूप से अंगरक्षक होगी। इसलिए, जहाँ सम्राट अक्सर स्थानों पर जाते थे या कुछ भोजों या सार्वजनिक कार्यक्रमों में लक्टेर्स या अंगरक्षकों से घेरे होते थे।

दलिचस्प बात यह है कि, इतिहासकार सुएटोनियस के अनुसार, डोमशियिन के पास 24 लक्टेर्स थे जो अक्सर उसके साथ रहते थे। तो, क्या ऐसा है कि डोमशियिन, अक्सर ये लक्टेर्स उसका अनुसरण करते थे या जब डोमशियिन खेलों या अन्य कार्यक्रमों की अध्यक्षता करते थे, तो अक्सर उनके साथ पुजारी भी होते थे, जिन्हें दलिचस्प ढंग से सुनहरे मुकुट पहने हुए बताया जाता था। वास्तव में, एशिया माइनर के एक अन्य साहित्य में, सम्राट पंथ को चलाने वाले पुजारी, सम्राट पंथ के लिए जिम्मेदार पुजारियों को भी अक्सर स्वर्ण मुकुट पहने हुए चतुरिती किया गया है।

तो, क्या यह संभव है कि जॉन ने एक ऐसी छवि का निर्माण किया है जो पुजारियों के 24 पाठ्यक्रमों या स्वर्गीय परिषद और ईश्वर के लोगों के स्वर्गीय प्रतिनिधियों के रूप में देवदूत प्राणियों की पुराने नियम की पृष्ठभूमि से संबंधित है? और वह, लेकिन साथ ही, उन्होंने ऐसी छवि का उपयोग किया है जो यह दर्शाती है कि गिरीको-रोमन पृष्ठभूमि में क्या चल रहा था। तो, उस ईश्वर की तुलना वास्तव में डोमनियनियन से की जा रही है, यद्यपि वह सम्राट शासन कर रहा है।

तो, अध्याय चार में, फरि से, यह अधिक ईंधन है, अध्याय चार के परत-शिाही होने की आग में और अधिक ईंधन जोड़ता है। हालांकि यह कहना बेहतर होगा कि ईश्वर की तुलना डोमनियन से नहीं की जा रही है जतिनी कि इसके विपरीत। डोमनियन की तुलना ईश्वर से की जा रही है और डोमनियन का शासन छोटा पड़ता नजर आ रहा है।

ईश्वर के शासन का सीज़र द्वारा विरोध किया जाता है। ईश्वर के शासन का सीज़र द्वारा विरोध किया जाता है, लेकिन सीज़र एक खराब पैरोडी है, या सीज़र ईश्वर के शासन की एक खराब नकल है, जो सीज़र के साथ संघर्ष में है। इसलिए, सीज़र को ईश्वर के शासन और ईश्वर के शासन के समान ही वर्णित किया जा सकता है।

तो, फरि से, जॉन जानबूझकर ऐसी कल्पना का चित्रण कर रहा है जो यहूदी पृष्ठभूमि को उजागर करती है, लेकिन ग्रीको-रोमन पृष्ठभूमि को भी स्पष्ट करती है ताकि ईश्वर और सीज़र और प्रभारी कौन है, जो वास्तव में ब्रह्मांड का शासक है, के बीच संघर्ष को प्रदर्शित किया जा सके। यह सीज़र नहीं है जो अपने दल से घिरा हुआ है, बल्कि अब यह ईश्वर है जो अपने सहिसन पर बैठा है, जो स्वर्गदूत प्राणियों के अपने दल से घिरा हुआ है जो सीज़र के सीधे विपरीत में उसकी संप्रभुता को पूजा करते हैं और स्वीकार करते हैं। वास्तव में, दिलचस्प बात यह है कि, सभी विवरणों में जाए बिना, अध्याय 4 और 5 का पूरा दृश्य, फरि से एक ही स्तर पर हो सकता है, हालांकि हमने अध्याय 4 और 5 को देखा है, ऐसा प्रतीत होता है कि यह जानबूझकर यह जकल 1 और से स्वर्गीय सहिसन कक्ष पर आधारित है। 2 और यशायाह अध्याय 6। साथ ही, प्रकाशतिवाक्य के अध्याय 4 और 5 भी रोमन दुनिया में ज्ञात अदालती दृश्यों से भिन्न हो सकते हैं।

कार्यों की एक श्रृंखला, जो कुछ लेखों से शुरू होती है और वर्ड बाइबलि कमेंटरी श्रृंखला में उनकी प्रमुख टिप्पणी के साथ समाप्त होती है, पहला खंड जो अध्याय 4 और 5 को कवर करता है। डेविड ओने ने तर्क दिया है कि 4 और 5 में जो कुछ मिला है, वह उससे मिला जुलता है। हम जानते हैं और हम रोमन दुनिया में अदालत के दृश्यों के बारे में क्या जान सकते हैं, जहां ओने का सुझाव है कि सीज़र को उसके सहिसन पर बैठाया गया होगा। वह इन लक्टेर्स या पुजारियों के समान अपने दोस्तों से घिरा हुआ होता। वह अपने दोस्तों से घिरा रहता।

उसके दोस्तों और उसके आस-पास के लोगों ने सीज़र, जो अपने सहिसन पर बैठा था, की प्रशंसा और प्रशंसा के शब्द चलाए होंगे। और अब, इसकी प्रत्यक्ष नकल में, भगवान को अपने सहिसन पर चित्रित किया गया है, जो अपने अनुयायियों या अपने दोस्तों, अपने दरबारियों से घिरा हुआ है, और वे अब भगवान की स्तुति और प्रशंसा के शब्द चला रहे हैं। तो, यह परमेश्वर है जो राजा है, और सीज़र नहीं है।

इसलिए, जैसा कि मैंने कहा, यह इतना अधिक नहीं हो सकता है कि भगवान का सहिसन सीज़र की नकल है और इसके विपरीत। सीज़र के सहिसन को एक भड़ोआ, एक घटिया भड़ोआ और भगवान के सहिसन की कमी के रूप में देखा जाता है। लेकिन मुझे लगता है कि यहां स्पष्ट रूप से साम्राज्य विरोधी बयानबाजी चल रही है।

जैसा कि मैंने कहा, जॉन संभवतः स्वर्गीय सहिसन कक्ष के एक दृश्य का निर्माण करने के लिए पुराने नियम की कल्पना और ग्रीको-रोमन कल्पना दोनों का चित्रण कर रहे हैं, जहां भगवान अपने सहिसन पर बैठे हैं और स्वर्गीय दरबार के सभी नविसी भगवान को घेरते हैं और उनकी पूजा करते हैं और संपूर्ण ब्रह्मांड पर संप्रभु निर्माता और शासक के रूप में उसकी संप्रभुता को स्वीकार करें।

सहिसन के आस-पास के वातावरण के इस हसिसे के संबंध में ध्यान आकर्षित करने वाली दूसरी विशेषता कांच के समुद्र या कांच के समुद्र का संदर्भ है, जो श्लोक 4 से शुरू होता है, सहिसन के चारों ओर चार अन्य सहिसन हैं जिनमें 24 बुजुर्ग बैठे हैं, और वे श्वेत वस्त्र पहने हुए थे, और उनके सरों पर सोने के मुकुट थे। सहिसन से बैजिली की चमक आद निकली।

सहिसन के सामने जलते हुए दीपक थे। ये परमेश्वर की सात आत्माएँ हैं। इसके अलावा, सहिसन के सामने कांच का समुद्र जैसा दिखता था।

मैं सात आत्माओं को छोड़ने जा रहा हूँ। हम पहले ही उसका परिचय देख चुके हैं। हमने कहा कि सात आत्माएँ शायद भगवान की सात गुना आत्मा का प्रतिनिधित्व करती हैं और सात अलग-अलग, सात अलग-अलग आत्माएँ नहीं, बल्कि सात पूर्णता और पूर्णता के प्रतीक की छवि हैं।

यहाँ परमेश्वर की आत्मा की परिपूर्णता है, परमेश्वर के सहिसन के संबंध में परमेश्वर की पूर्ण भावना। लेकिन मैं जिस चीज़ पर ध्यान केंद्रित करना चाहता हूँ वह वास्तव में दो विशेषताएँ हैं, जिसकी शुरुआत इस शीशे जैसे समुद्र से होती है। संभवतः कांच का समुद्र मंदिर की कल्पना को आगे बढ़ाता है।

यह संभवतः सोलोमन के मंदिर में बेसनि या हौद का प्रतिनिधित्व करता है। लेकिन साथ ही, ऐसा प्रतीत होता है कि कांच का यह समुद्र, फरि से, एक विशेषता का प्रतिनिधित्व कर सकता है जैसे हम यहजकेल के अध्याय 1 में उसके सहिसन के दर्शन के विवरण में पाते हैं। यहजकेल अध्याय 1 और श्लोक 22 में, और जैसा कि हमने कहा, जॉन भारी रूप से निर्भर है यहजकेल अध्याय 1 और 2 पर, विशेष रूप से अध्याय 4 और 5 में जॉन के स्वयं के दर्शन में जो कुछ वह देखता है उसका वर्णन करने के लिए। लेकिन अध्याय 1 और श्लोक 22 में, मैं श्लोक 19 से शुरू करूँगा, जब जीवित प्राणी चले गए, तो यह एक तरह की आशा करता है अगला समूह जिसमें हम जीवित प्राणियों के लिए देखेंगे। परन्तु जब जीवधारी चलते थे, तो पहिये भी उनके साथ चलते थे, और जब जीवधारी भूमा पर से उठते थे, तो पहिये भी उठते थे।

लेकिन अब मैं श्लोक 22 पर आता हूँ: जीवित प्राणियों के सरों के ऊपर फैला हुआ एक वसितार सा दिखाई दे रहा था, जो बर्फ की तरह चमक रहा था और भयानक था। तो, एक विशाल, जगमगाते हुए दृश्य का यह दृश्य, जॉन के कांच जैसे समुद्र जैसा हो सकता है या उसकी प्रेरणा हो सकता है जैसे वह अब देखता है। लेकिन फरि, इसे सरिफ एक तक सीमित रखने का शायद कोई कारण नहीं है।

मंदिर की जो कल्पना मिलती है उसे देखते हुए, यदि यह सहिसन कक्ष का दृश्य भगवान का मंदिर है, तो सुलैमान के मंदिर में बेसनि की पृष्ठभूमि निश्चित रूप से एक उपयुक्त पृष्ठभूमि प्रदान करेगी। लेकिन चूंकि यह यहजकेल, यहजकेल 1:22 पर चित्रण कर रहा है, यह चमचमाता वसितार जॉन जो देखता है उसके लिए पृष्ठभूमि भी प्रदान कर सकता है। एक और संभावित पृष्ठभूमि लाल सागर होगी, जिसके बारे में मैं तरिक दूंगा कि यह रहस्योद्घाटन में कहीं और भूमिका निभाता है।

वास्तव में, मुझे लगता है कि यह रहस्योद्घाटन के अध्याय 15 और श्लोक 2 में और अधिक स्पष्ट हो जाता है, जहाँ, दिलचस्प बात यह है कि, आप संतों को स्वर्ग में अध्याय 15 से शुरू करते हुए वजिरी खड़े हुए देखते हैं। 15 पद 1, मैं ने स्वर्ग में एक और बड़ा अद्भुत चिन्ह देखा, अर्थात् सात स्वर्गदूत जिन के पास

सात पछिली वपित्तियां थीं, हां, उन पर परमेश्वर का क्रोध पूरा हुआ। अब इसे सुनो, पद 2, और मैंने कांच के समुद्र जैसा कुछ देखा।

अध्याय 4 से, आग से मशिरति होकर और समुद्र के कनारे खड़े होकर, जो उस पशु और उसकी मृत पर, और उसके नाम के अंक पर जयवन्त हुए थे, और उन्होंने परमेश्वर की दी हुई वीणाएं पकड़ रखी थीं, और उन्होंने मूसा का गीत गाया, भगवान का सेवेक. तो, अध्याय 15 में, आपके पास एक नए पलायन में संतों की यह तस्वीर है जो बुराई के उत्पीड़न और शैतान और जानवर और दमनकारी रोमन साम्राज्य से मुक्त हो रहे हैं। अब वे समुद्र के कनारे मूसा और इस्राएलियों के समान वजियी हुए हैं, और वे इस्राएलियों के समान मूसा का गीत गाते हैं।

तो यह कहते हुए कयिह भी हो सकता है, अध्याय 4 में यह कांच जैसा समुद्र, लाल सागर की भी आशा कर सकता है, और इसका मुद्दा शायद यह है, मुझे लगता है, बस यही है, रहस्योद्घाटन में, समुद्र अक्सर देखा जाता है, और मुझे लगता है कयिह था यह सच है कि निरिगमन वृत्तांत में भी, समुद्र को अक्सर ऐसी चीज के रूप में समझा जाता है जो बुरी है। बाद में, एक जानवर समुद्र से बाहर आएगा। समुद्र उस रसातल के समान प्रतीत होता है जहाँ से राक्षसी प्राणी आते हैं, जहाँ से बुराई आती है।

बाद में प्रकाशतिवाक्य में समुद्र मृतकों का घर है। तो, प्रकाशतिवाक्य में समुद्र के सभी प्रकार के नकारात्मक अर्थ हैं, और आप इसे यहूदी साहित्य में भी पा सकते हैं। समुद्र समुद्री राक्षस का घर है, वह जानवर जो परमेश्वर के लोगों पर अत्याचार करने के लिए आता है।

तो, आप अध्याय 4 में जो घटित होता हुआ पाते हैं वह पहले से ही अराजकता का समुद्र है और बुराई को पहले ही शांत और पराजित किया जा चुका है। तो, परमेश्वर के लोगों को डरने की क्या जरूरत है? बुराई का समुद्र पहले ही वश में हो चुका है, और वह पहले ही शांत हो चुका है। एक तरह के पूर्वानुमान के लिए, मुझे लगता है कयिह न केवल अध्याय 15 का अनुमान लगाता है जहाँ लोग समुद्र के कनारे खड़े हैं, इसे शांत और वश में कर लिया गया है, बल्कि यह अध्याय 21 श्लोक 1 का भी अनुमान लगाता है जहाँ समुद्र अब नहीं था।

यानी बुराई और अराजकता का समुद्र हटा दिया गया है ताकि भगवान अब प्रकाशतिवाक्य अध्याय 21 में एक नया रचनात्मक कार्य करें। इसलिए, यह विचार हालांकि भगवान के नविस में है, भगवान के मंदिर में, सब कुछ शांत है। प्रकाशतिवाक्य में जो समुद्र परमेश्वर के लोगों के लिए समस्याएं पैदा करेगा, उसे परमेश्वर की उपस्थिति और उसकी संप्रभुता द्वारा पहले ही वश में कर लिया गया है और शांत कर दिया गया है।

संकषेप में आपका ध्यान आकर्षित करने वाली दूसरी विशेषता गूडगड़ाहट और बजिली है जो श्लोक 5 में सहिसन से आती है। सहिसन से बजिली की चमक और गूडगड़ाहट और गूडगड़ाहट की आवाजें आती हैं। दलिचसुप बात यह है कि निरिगमन और माउंट सनाई का एक और संकेत स्पष्ट रूप से थियोफनी को इंगित करता है, यह भी स्पष्ट रूप से प्रदर्शित करता है कि अध्याय 4 भी अपने सहिसन पर भगवान का एक दृश्य है, जो न्याय करने के लिए तैयार है। और अध्याय 6 से शुरू करके हम फिर से देखेंगे कि क्या होता है, भगवान अपने राज्य की स्थापना में इस सृष्टि और दुष्ट मानवता का न्याय करना शुरू करते हैं।

इसके बाद यह हमें श्लोक 6-8 में अगले समूह के लिए पृष्ठभूमि प्रदान करता है और वह है चार जीवित प्राणी। यह अपने सर्वोत्तम रूप में सर्वनाशकारी प्रतीकवाद है। फरि, आपके पास ये जीव हैं जिनमें जानवरों की विशेषताएं हैं।

उनमें मानवीय विशेषताएं भी हैं। इनमें से एक शेर जैसा दखिता है। एक बैल जैसा दखिता है।

एक इंसान जैसा दखिता है। दूसरा उड़ते हुए बाज जैसा दखिता है। उन सभी के छह पंख हैं।

उनकी हर तरफ नजर है। वे वास्तव में बहुत ही अजीब प्राणी हैं। फरि, यह अपने सर्वोत्तम रूप में सर्वनाशकारी प्रतीकवाद है।

स्पष्टतः; जॉन ने यह जकेल अध्याय 1 से इसकी प्रेरणा ली है। हम पहले ही यह जकेल में जीवित प्राणियों के बारे में पढ़ चुके हैं। लेकिन साथ ही, यशायाह अध्याय 6 से छह पंखों आदिकी कुछ भाषाएं सामने आती हैं। इसलिए फरि से, जॉन अपने भविष्यवक्ता पूर्ववर्तियों का उपयोग करके एक दृश्य का निर्माण कर रहा है ताकि यह स्पष्ट हो सके कि उसने जो देखा वह अतीत के अन्य भविष्यवक्ताओं के साथ निरंतरता में है।

फरि से, वह एक तरह से उनका कार्यभार संभाल रहा है। लेकिन अब जॉन यीशु मसीह की पूर्णता के प्रकाश में लिखता है, जो अध्याय 5 में दृश्य पर दिखाई देगा। मुझे लगता है कि तब आपके पास जो कुछ होगा, वह यह चतुर है जैसे जॉन ने बनाया है। हमने कहा कि सिहिसन केंद्र में है, और सेंकेंद्रित वृत्तों को वसित करने में आपके पास अगले 24 बुजुर्ग हैं।

फरि मुझे लगता है कि हमें उनके बाहर के चार जीवित प्राणियों का चतुर बनाना चाहिए। और प्राणियों और बड़ों का कार्य एक ही है। उन्हें 'दिन-रात परमेश्वर की आराधना करनी चाहिए।

उन्हें ईश्वर की निरंतर स्तुति करनी चाहिए क्योंकि वह सभी चीजों का निर्माता है। और क्योंकि वह अपनी सारी सृष्टि पर संप्रभु शासक है। ईजेकील और यशायाह की पृष्ठभूमि को देखते हुए, हम शायद इन चार जीवित प्राणियों को 24 बुजुर्गों की तरह, देवदूत प्राणियों के रूप में समझ सकते हैं।

और फरि, जसि महत्वपूर्ण बिंदु पर मैं जोर देना चाहता हूं वह यह है कि सिटीक रूप से या सटीक रूप से पता लगाना इतना महत्वपूर्ण नहीं है कि वे कौन हैं या उन्हें पहचानना उतना महत्वपूर्ण नहीं है जतिना कि उनकी प्रशंसा, निरंतर प्रशंसा और उस पर बैठे व्यक्तियों की पूजा के कार्य को पहचानना है। सिहिसन। एक प्रश्न जो उठाया जा सकता है वह यह है कि चार क्यों? प्रतीकवाद की हमारी चर्चा पर वापस जाने के लिए, हमने कहा कि रिहस्योदघाटन में संख्याओं को उनके सख्त गणितीय मूल्य या संख्यात्मक परिशुद्धता के लिए नहीं बल्कि प्रतीकात्मक रूप से उनके अर्थ के लिए लिया जाना चाहिए। हमने देखा कि संख्या चार एक ऐसी संख्या है जो संपूर्ण पृथ्वी का प्रतीक है।

यह संपूर्ण पृथ्वी का प्रतिनिधित्व करता था। तो, ये चारों, जैसे कि पृथ्वी के चार कोने, सुझाव देते हैं कि ये चार जीवित प्राणी संभवतः स्वर्गीय देवदूत प्राणी हैं जो सभी निर्मित व्यवस्था का प्रतिनिधित्व करते हैं। यह सारी सृष्टि, सारी चेतन सृष्टि और सारे जीवन का स्वर्गीय प्रतिरूप है जो अब इन चार जीवित प्राणियों द्वारा दर्शाया गया है।

और यह उनकी पहचान से सुझाया जा सकता है। तथ्य यह है कि एक शेर है, एक बछड़ा है, एक आदमी है, और एक बाज है, फरि से चेतन सृजन के पूर्ण स्पेक्ट्रम का सुझाव दे सकता है।

अब जबकि चार जीवित प्राणी उस नरितर स्तुति की पेशकश के प्रतिनिधि हैं, दलिचस्प बात यह है कि, फरि से, सार्वभौमिक स्तुति और पूजा की प्रत्याशा है जो अंततः इस वर्तमान पृथ्वी पर घटित होगी।

एक वर्तमान पृथ्वी जो अब इस समय भगवान की संप्रभुता और भगवान की पूजा का वरिध करती है। तो, इन सबका मुद्दा यह है कि संपूर्ण स्वर्ग परमेश्वर की संप्रभुता को स्वीकार करता है। संपूर्ण स्वर्ग, या स्वर्ग एक ऐसा स्थान है जहां ब्रह्मांड पर नरिमाता और शासक के रूप में भगवान की संप्रभुता को पूरे स्वर्ग द्वारा पूरी तरह से स्वीकार किया जाता है, पूजा की जाती है, स्तुति की जाती है और भगवान की पूजा की जाती है।

छंद 8 से 11 फरि कुछ स्थानों पर ठीक वही चतुरि करत हैं जो 24 बुजुर्ग और चार जीवित प्राणी अपनी पूजा में कहते और व्यक्त करते हैं। और फरि, अगर मैं श्लोक 8 से शुरू करके पढ़ सकता हूँ, तो चार जीवित प्राणियों में से प्रत्येक, दनि और रात, यह कहना कभी नहीं बंद करेगा, पवतिर, पवतिर, पवतिर प्रभु परमेश्वर सर्वशक्तमिनि है, जो था और जो आने वाला है। और जब प्राणी ऐसा करते हैं, तब 24 प्राचीन झुकते हैं, और पद 11 में वे यही गाते हैं, हे हमारे प्रभु और परमेश्वर, तू महिमा, आदर और शक्ति पाने के योग्य है, क्योंकि तू ने सब वस्तुएं बनाई, और तेरी ही इच्छा से उन्होंने बनाए गए थे और उनका अपना अस्तित्व है।

दूसरे शब्दों में, मुद्दा यह है कि ईश्वर पूजा के योग्य है क्योंकि वह जो कुछ भी है, उसका सर्वशक्तमिनि नरिमाता है। वह पवतिर संप्रभु सर्वशक्तमिनि ईश्वर है जो सभी का नरिमाता है और जो सारी सृष्टि पर संप्रभु है। और इसी कारण से, परमेश्वर आराधना के योग्य है।

दूसरे शब्दों में, अगर मैं एक पल के लिए देहाती हो सकता हूँ जब हम पूजा के संदर्भ में सोचते हैं और हम क्यों पूजा करते हैं, कभी-कभी मुझे लगता है कि हम सोचते हैं कि किसी तरह भगवान को हमारी पूजा की आवश्यकता है, कि भगवान बस अपने प्राणियों के आने और पूजा करने की प्रतीक्षा कर रहे हैं और वह हमारी आराधना का पोषण करता है और किसी तरह उसे हमारी आराधना की आवश्यकता है। या कि भगवान ऊपर देख रहे हैं और यह सुनिश्चित करने के लिए इंतजार कर रहे हैं कि हम अपनी पूजा सही तरीके से करें, कि हम सही पूजा गीत गाएं और कि हम सही तरीके से काम करें, ऐसा न हो कि भगवान नरिश होकर चले जाएं क्योंकि उन्हें पूजा नहीं मिली जो वह चाहता था। या, फरि से, कि किसी तरह भगवान को अपने अहंकार को बढ़ावा देने या ऐसा ही कुछ करने के लिए हमारी पूजा की आवश्यकता है।

लेकिन प्रकाशतिवाक्य अध्याय 4 हमें याद दिलाता है कि नहीं, हम ईश्वर की पूजा केवल इसलिए करते हैं क्योंकि वह इसके योग्य है और क्योंकि वह इसके योग्य है। भगवान को हमारी पूजा की आवश्यकता नहीं है। ईश्वर को अपने रचयिता की पूजा से अहंकार बढ़ाने की आवश्यकता नहीं है।

पूर्णता और व्यक्तगित संतुष्टि पाने के लिए भगवान को हमारी पूजा की आवश्यकता नहीं है। उसे हमारी पूजा की जरूरत नहीं है क्योंकि वह इतना अकेला है कि उसे अपनी कीमत पहचानने वाले की जरूरत है। इसके बजाय, हम पूरी तरह से भगवान की पूजा करते हैं क्योंकि वह इसके योग्य है, क्योंकि वह

जो कुछ भी है उसका संप्रभु नरिमाता है और क्योंकि वह पवतिर सर्वशक्तमिान भगवान है जो अपनी सारी सृष्टिपर संप्रभु है।

केवल इसी कारण से, चर्च को परमेश्वर की आराधना और आराधना करनी चाहिए जो सहिसन पर बैठा है। तो, एक अर्थ में, प्रकाशतिवाक्य 4 और 5 हमें एक सच्ची वास्तविकता की याद दिलाते हैं जो हमारी सांसारिक वास्तविकता से परे है। यह हमें याद दिलाता है कि वास्तव में नयितरण किसके पास है।

यह हमें याद दिलाता है कि एक सुंदरभ में और ऐसे माहौल में कौन वास्तव में हमारी पूजा के योग्य है, जहां इस पर विवाद है और हम एक ऐसी दुनिया में हैं जो भगवान की संप्रभुता को स्वीकार करने से इनकार करती है। रहस्योद्घाटन एक ऐसी दृष्टि से शुरू होता है जो वास्तव में वास्तविक और वास्तव में सत्य है जो हमारी सांसारिक वास्तविकता से परे है। साथ ही, प्रकाशतिवाक्य 4 और 5 एक ऐसे दिनि की आशा करते हैं जब सारी सृष्टि ईश्वर की संप्रभुता को स्वीकार करेगी, जब सारी सृष्टि ईश्वर की पूजा उन सभी चीजों के नरिमाता के रूप में करेगी, जहां ईश्वर की इच्छा पृथ्वी पर उसी तरह पूरी होगी जैसे स्वर्ग में होती है।

अध्याय 4 और 5 हमें याद दिलाते हैं कि स्वर्ग में जो होता है वह अभी तक नहीं हुआ है, लेकिन पृथ्वी पर पूरा किया जाएगा, इस तथ्य के बावजूद कि पृथ्वी ने वरिध किया है और पृथ्वी एक ऐसी जगह है जहां इसका वरिध किया जाता है। लेकिन उससे पहले, प्रकाशतिवाक्य अध्याय 4 और 5 हमें याद दिलाते हैं कि अब हम परमेश्वर की आराधना में स्वर्ग से जुड़ते हैं। जब हम, प्रभु की प्रार्थना के प्रकाश में, आपका राज्य आते हैं, तो आपकी इच्छा पृथ्वी पर पूरी होती है जैसे कि यह स्वर्ग में होती है, हालांकि हम अभी भी प्रकाशतिवाक्य 21 और 22 में इसकी प्रतीक्षा करते हैं, पहले से ही जब चर्च प्रकाशतिवाक्य में या पहले में पूजा करने के लिए इकट्ठा होता है सदी या किसी अन्य समय में, चर्च ईश्वर की संप्रभुता को स्वीकार करने, पहले से ही ईश्वर की पूजा करने और यह स्वीकार करने में स्वर्ग में शामिल होता है कि ईश्वर पूरे ब्रह्मांड पर शासक है, जसिने इस पर विवाद किया और इसे स्वीकार करने से इनकार कर दिया।

इसके अलावा, अध्याय 4 और 5, पूजा के इस दृष्टिकोण को प्रदान करके, अध्याय 4 और 5 हमारी सभी आधुनिक मूर्तियों को उजागर करता है और उखाड़ फेंकता है, कुछ भी जो उस पूजा और संप्रभुता के साथ प्रेतसिप्रधा करेगा जिसके केवल भगवान हकदार है, और हमें पूजा करने की याद दिलाते हैं और किसी भी चीज या किसी भी व्यक्तियों किसी समूह या राष्ट्र या इकाई के प्रतिनिष्ठा, उन्हें यह बताना कि वह पूजा और निष्ठा जिसका केवल ईश्वर ही हकदार है, मूर्तपूजा से कम नहीं है। इस पाठ के बारे में कुछ अन्य रोचक बातें। सबसे पहले, एक आधुनिक समय की लोकप्रिय धारणा को फरि से खारिज करने के लिए, मुझे इस धारणा के साथ बड़ा किया गया था कि एक दिनि, जब हम स्वर्ग पहुंचेंगे, तो हम अपना मुकुट यीशु के चरणों में डाल देंगे।

और कुछ गीत ऐसे भी हैं जो अपना मुकुट यीशु के चरणों में अर्पित करने के विचार को दर्शाते हैं। मुझे लगता है कि एकमात्र स्थान, जब तक कि मैं गलत न हो, एकमात्र स्थान जहां आपको यह धारणा मिलती है वह प्रकाशतिवाक्य 4 श्लोक 10 है, जहां वे सहिसन के सामने अपने मुकुट रखते हैं। वह कौन है जो सहिसन के सामने मुकुट रख रहा है? ये 24 बुजुर्ग हैं।

24 बुजुर्ग कौन हैं? यदि हम सही हैं कि वे देवदूत प्राणी हैं, तो नए नियम में परमेश्वर के लोगों द्वारा यीशु के चरणों में या परमेश्वर के चरणों में अपने मुकुट फेंकने की कोई तस्वीर नहीं है। यहाँ अध्याय 4 में देवदूत ही ऐसा करते हैं। फरि, यह सच हो सकता है।

मैं यह नहीं कह रहा कि यह धारणा ग़लत है या कुछ और। मुझे लगता है कि रहस्योद्घाटन के अध्याय 4 की उचित समझ से पता चलता है कि यह सरिफ़ यह महसूस करने के लिए है कि यह संत नहीं है, यह भगवान के लोग नहीं हैं जो भगवान के चरणों के सामने अपना मुकुट डालते हैं। लेकिन यह उन 24 बुजुर्गों की अभिव्यक्ति है जो देवदूत प्राणी हैं, भगवान के लोगों के प्रतिनिधि हैं।

तो शायद नहितार्थ यह हो सकता है कि भगवान के लोग भी एक दिन ऐसा ही करेंगे। यह सच हो सकता है। लेकिन मुख्य रूप से अध्याय 4 में, यह स्वर्गदूत प्राणी हैं जो भगवान के सहिसन को घेरते हैं और उनकी पूजा करते हैं जो अपने मुकुट डालते हैं।

और वे ऐसा करते हैं। कम से कम इस बंदी पर, यह मुख्य रूप से भविष्य में भी होने वाला संदर्भ नहीं है। दूसरी बात यह है कि अध्याय 4 अध्याय 21 और 22 में क्या होने वाला है, इसकी एक झलक या हम कह सकते हैं कि एक पूर्वानुमान भी प्रदान करता है।

यह विशेष रूप से अंतिम भजन है जसि 24 बुजुर्ग 4 में गाते हैं, लेकिन यह भजन भी जीवति प्राणी गाते हैं। लेकिन यह अंतिम भजन, आप हमारे परभु और परमेश्वर के योग्य हैं कि वे महिमा, सम्मान और शक्ति प्राप्त करें क्योंकि आपने सभी चीजें बनाईं और आपकी इच्छा से वे बनाए गए और उनका अस्तित्व है। दिलचस्प बात यह है कि, जैसा कि हमने बाद में कहा, इंद्रधनुष का उद्भव, यद्यपि अधिकांश टीकाकारों के अनुसार उत्पत्ति अध्याय 6 और बाद के बाद के इंद्रधनुष की ओर इशारा करता है, जो भगवान की वाचा, सृजन के प्रति उनकी प्रतिबद्धता, इन सभी को एक साथ रखकर दर्शाता है, तो मुझे ऐसा लगता है कि तथ्य यह है कि भगवान को सभी चीजों के निर्माता के रूप में मनाया जाता है और पूजा की जाती है, इस तथ्य की भविष्यवाणी या सुझाव देता है कि भगवान नए रचनात्मक कार्य करने के लिए पूरी तरह से सक्षम और शक्तिशाली हैं, खासकर प्रकाशतिवाक्य 21 और 22 में नई रचना।

तो, पहले से ही, और फिर से, इसे अपनी रचना के प्रति ईश्वर की वफादारी के प्रदर्शन के रूप में इंद्रधनुष के साथ भी लपेटा जा सकता है। पूजा के योग्य सभी चीजों के सर्वोच्च निर्माता के रूप में, ईश्वर एक नई रचना करने में सक्षम है, जो वह वास्तव में प्रकाशतिवाक्य 21 और 22 में करेगा। तो, यह तथ्य कि ईश्वर अपने सहिसन पर बैठा है, चारों ओर से घिरा हुआ है उनका स्वर्गीय दल, जो उनकी नरितर प्रशंसा और पूजा करते हैं, जो समस्त सृष्टि पर संप्रभु शासक के रूप में, सभी के संप्रभु निर्माता के रूप में उनकी संप्रभुता को स्वीकार करते हैं।

अब, हम अध्याय 5 पर आगे बढ़ने के लिए तैयार हैं। यह अध्याय 5 के लिए स्वर निर्धारित करता है। जैसा कि हमने कहा, अध्याय 4 अध्याय 5 में जो मिला है उसके लिए पृष्ठभूमि प्रदान करता है या सेटिंग प्रदान करता है। इसलिए, अध्याय 5 फिर एक नरितरता है अध्याय 4 में दर्शन का। और जैसा कि हमने पहले ही उल्लेख किया है, यह सहिसन की छवि से जुड़ा हुआ है, वही सहिसन जिससे अध्याय 4 शुरू होता है। जो सहिसन पर बैठा है वह अध्याय 5 के श्लोक 1 से शुरू होता है, जहां जान कहता है, मैंने सहिसन पर बैठे हुए व्यक्ति के दाहिने हाथ को देखा। यह वही व्यक्ति है जिसका उसने उल्लेख किया है या वही छवि है जिसका उल्लेख अध्याय 4 की शुरुआत में किया गया था। अब, जैसा कि मैंने अध्याय 4 के साथ किया था, मैं आपको अध्याय 5 पढ़ना चाहता हूं। और मैं चाहता हूं कि आप, फिर से, इस तरह की बात करें आपकी आंखों के सामने तस्वीरें घुमती हैं और कल्पना करती हैं कि क्या हो रहा है जैसा कि जान ने देखा और अब रिकॉर्ड किया है।

तो, प्रकाशतिवाक्य अध्याय 5 श्लोक 1 में, फरि जो सहिसन पर बैठा था, उसके दाहिने हाथ में मैंने एक पुस्तक देखी, जिसके दोनों ओर लिखा हुआ था। और पुस्तक सात मुहरों से बन्द की गई। और मैंने एक बलवन्त स्वर्गदूत को ऊँचे शब्द से यह प्रचार करते देखा, कि कौन मुहरें तोड़ने और पुस्तक खोलने के योग्य है।

परन्तु न तो स्वर्ग में, न पृथ्वी पर, न पृथ्वी के नीचे कोई उस पुस्तक को खोल सका, और न उसके भीतर झाँक सका। मैं रोया और रोया, या मैं बहुत रोया क्योंकि कोई भी इस योग्य नहीं पाया गया कि पुस्तक खोल सके या उसके अंदर झाँक सके। तब उन बुजुर्गों में से एक ने मुझ से कहा, रोओ मत।

यहूदा के गोत्र का सहि देख, दाऊद का मूल जयवन्त हो गया है। वह पुस्तक और उसकी सात मुहरें खोलने में सक्षम है। फरि मैंने दृष्टि की और देखा कि एक मेमना ऐसा लग रहा था मानो उसका वध कर दिया गया हो, वह सहिसन के बीच में खड़ा था और चार जीवित प्राणियों और बुजुर्गों के साथ घिरा हुआ था।

उसके सात सींग और सात आँखें थीं, जो परमेश्वर की सात आत्माएँ हैं जो सारी पृथ्वी पर भेजी गई हैं। वह आया और उसने जो सहिसन पर बैठा है, उसके दाहिने हाथ से पुस्तक ले ली। और जब उसने उसे ले लिया, तो चारों प्राणी और चौबीस प्राचीन मेमने के साम्हने गरि पड़े।

प्रत्येक के पास हृदय था और वे धूप से भरे सोने के कटोरे पकड़े हुए थे, जो संतों की प्रार्थनाएँ हैं। और उन्होंने एक नया गाना गाया। तू उस पुस्तक को लेने और उसकी मुहरें खोलने के योग्य है, क्योंकि तू मारा गया है।

और अपने खून से, तुम परमेश्वर के लिए लोगों को, हर जनजात और भाषा और लोगों और राष्ट्र के लोगों को खरीदते हो। तूने उन्हें हमारे परमेश्वर की सेवा करने के लिये याजकों का राज्य बना दिया है, और वे पृथ्वी पर राज्य करेंगे। फरि मैंने देखा और मैंने कई स्वर्गदूतों की आवाज़ सुनी, जिनकी संख्या हजारों-हजारों और 10,000 और 10,000 थी।

उन्होंने ऊँचे शब्द से सहिसन, जीवित प्राणियों और पुरनियों को घेर लिया। उन्होंने गाया कि वध किया गया मेमना शक्ति, धन, बुद्धि, शक्ति, आदर, महिमा और प्रशंसा पाने के योग्य है। तब मैंने स्वर्ग में, और पृथ्वी पर, और पृथ्वी के नीचे, और समुद्र में, और जो कुछ उन में है, सब प्राणियों को उसके लिये जो सहिसन पर बैठा है, और मेमने के लिये गाते हुए सुना, युगानुयुग स्तुति, और आदर, और महिमा, और सामर्थ्य रहे।

तब चारों प्राणियों ने तथास्तु कहा। और पुरनियों, चौबीस पुरनियों ने गरिकर दण्डवत् किया। तो, अध्याय पाँच, जैसा कि हमने कहा, अध्याय चार की नरितरता है, लेकिन यह अध्याय चार के चरमोत्कर्ष के रूप में कार्य करता है।

अध्याय चार पाँच के लिए यही सेटिंग प्रदान करता है। अध्याय चार इसी पर जोर दे रहा है। और यही पर अध्याय चार में कार्रवाई होती है।

यह इन दो अध्यायों का मुख्य फोकस है। हम पहले ही देख चुके हैं कि दोनों के बीच नरितरता है क्योंकि अध्याय चार की कुछ समान छवियाँ,

हम अभी भी स्वर्ग में हैं, स्वर्गीय सहिसन पर, लेकिन हमने पहले ही सहिसन और सहिसन पर बैठे व्यक्तियों को नोट कर लिया है। इस अध्याय को पढ़ते समय, हमने चार जीवित प्राणियों को फरि से उभरते हुए देखा है।

हमने 24 बुजुर्गों को फरि से उभरते देखा है। तो, हमारे पास एक ही सेटिंग है, भगवान का सहिसन कक्ष, लेकिन अध्याय पांच में इस दूरदर्शी खंड में दो अतिरिक्त विशेषताएं उभरती हैं जो इस अध्याय में क्या चल रहा है इसे समझने के लिए अत्यधिक महत्वपूर्ण हैं। और दो नई विशेषताएं या पात्र पुस्तक या स्क्रॉल और मेमना हैं।

ये अध्याय पाँच के दो केंद्र बिंदु हैं: पुस्तक या मेमना जैसी जॉन देखता है। और दृष्टि इनहीं दो चीजों के इर्द-गिर्द घूमती है। तो, अध्याय पांच की शुरुआत ईश्वर से होती है जो सहिसन पर बैठा है, ब्रह्मांड का सर्वोच्च शासक है, जिसके हाथ में एक पुस्तक है।

जाहरि है, इस अध्याय का कोई भी समझदार पाठक आश्चर्यचकित होगा, ठीक है, क्योंकि हमने इस स्क्रॉल को पहले नहीं देखा है, आश्चर्य होगा कि स्क्रॉल क्या है? इसमें क्या नहिती है? परमेश्वर ने यह पुस्तक अपने दाहिने हाथ में क्यों पकड़ रखी है? दाहिना हाथ अधिकार और शक्ति का प्रतीक है। जो सहिसन पर बैठा है, उसने यह पुस्तक अपने दाहिने हाथ में क्यों पकड़ रखी है? इसमें क्या है? यह महत्वपूर्ण क्यों है? सबसे पहले, यह छवा शायद, हालांकि एक स्क्रॉल की छवा में कई स्क्रॉल और दस्तावेजों में एक पृष्ठभूमि या एकाधिक पृष्ठभूमि हो सकती है जो ग्रीको-रोमन दुनिया में परिचित रही होगी, जैसे कि दोनों तरफ लिखे गए दस्तावेज, जिनमें जाना जाता है एक अभिलेख या वसीयत और वसीयतनामा और इस तरह की चीजें। ऐसी कई चीजें हैं जो जॉन के स्क्रॉल से मिलती जुलती हो सकती हैं, लेकिन इसके मूल में, जॉन का स्क्रॉल मुख्य रूप से अध्याय दो में ईजेकील की याद दिलाता है, जहां छंद नौ से शुरू होकर, यह ईजेकील दो और नौ है, जो ईजेकील के सहिसन कक्ष के दर्शन का हिसा है, अध्याय एक से शुरू करते हुए जैसी जॉन ने आगे बढ़ाया है।

अब अध्याय दो, श्लोक नौ में, फरि मैंने देखा और मैंने देखा कि एक हाथ मेरी ओर बढ़ा हुआ है। उसमें एक पुस्तक थी, जैसी उसने मेरे सामने खोलकर रख दिया। अब इसे सुनो, इसके दोनों ओर शब्द लिखे हुए थे।

तो, यह जकेल को एक स्क्रॉल दिखाई देता है जिसके दोनों तरफ लिखा हुआ है, जो बिल्कुल जॉन के जैसा ही है। लेकिन जाहरि तौर पर कुछ अंतर हैं। यूहन्ना की सात मुहरें हैं और वे उसके सामने नहीं खुलती।

कम से कम इस दृश्य में तो ऐसा नहीं है। ईजेकील इसे मुख्य रूप से वलाप, चेतावनी और दुःख के शब्दों के साथ जोड़ता है, जो एक नरिणय विषय है। जॉन हमें ठीक-ठीक नहीं बताता कि पुस्तक में क्या था।

जैसा कि हमने कहा, ग्रीको-रोमन दुनिया में स्क्रॉल के सभी प्रकार के साक्ष्य मौजूद हैं। डैनियल 12 में अन्य पुराने नियम की पृष्ठभूमि में, डैनियल एक सीलबंद स्क्रॉल देखता है, स्पष्ट रूप से एक स्क्रॉल जो सील किया गया है। तो, यह सब इस पुस्तक के लिए पृष्ठभूमि प्रदान करता है जैसी जॉन भगवान के दाहिने हाथ में देखता है जो दोनों तरफ लिखा हुआ है।

फरि, एक लोकप्रिय धारणा यह है कि यह स्क्रॉल क्या है, इस स्क्रॉल को एक वसीयतनामा के रूप में समझा जाना चाहिए जो व्यक्ति की मृत्यु तक सील किया जाने वाला एक वसीयतनामा है। और यीशु मसीह की मृत्यु अब उन्हें वसीयतनामा खोलने और उसकी सामग्री को प्रकट

करने में सक्रिय बनाती है। अन्य लोगों ने ग्रीको-रोमन दुनिया में अन्य प्रकार के स्क्रॉल या दस्तावेजों की ओर ध्यान आकर्षित किया है।

और आप विभिन्न प्रकार के विवरण देखने के लिए टिप्पणियाँ देख सकते हैं, टिप्पणियाँ पढ़ सकते हैं। जो कुछ भी है, और फिर से, मैं दोहराऊंगा कि प्राथमिक मॉडल ईजेकील 2 और शायद डैनियल 12 से आता है। लेकिन साथ ही, जान एक ऐसी छवि बना रहा है जिसकी ग्रीको-रोमन दुनिया से भी प्रतीति है।

लेकिन जो भी हो, सबसे महत्वपूर्ण मुद्दा शायद यह है कि इसमें क्या शामिल है। मेरी राय में, और मैं कई अन्य लोगों से सहमत होऊंगा जो कुछ इसी तरह का सुझाव देते हैं, शायद इस पुस्तक में पृथ्वी पर अपना राज्य स्थापित करने के लिए भगवान की योजना शामिल है। पृथ्वी पर मुक्ति और न्याय दोनों लाने की परमेश्वर की योजना।

याद रखें, हमने कहा था कि अध्याय 4 के मुद्दे का हिस्सा यह है कि स्वर्ग में दृश्य कैसा है जहां भगवान की संप्रभुता को स्वीकार किया जाता है, जहां भगवान पूरी सृष्टि पर शासन करते हैं, जहां सभी स्वर्ग पूजा करते हैं, उसे पृथ्वी पर कैसे स्वीकार किया जाता है और साकार किया जाता है? स्क्रॉल यह योजना है कि यह कैसे होगा। इसमें पृथ्वी पर परमेश्वर का राज्य स्थापित करने की योजना शामिल है। इसमें इस वर्तमान पृथ्वी पर न्याय और उद्धार लाने की ईश्वर की योजना शामिल है।

अब परमेश्वर उस योजना को संप्रभु रूप से अपने हाथों में रखता है, जिसका प्रतीक एक पुस्तक है। तो फिर, मुझे नहीं लगता कि हमें शब्दों के स्क्रॉल देखना चाहिए। खासकर तब से जब बाद में मेमना आकर इसे ले जाएगा। और आप कैसे कल्पना करते हैं कि एक मेमना सामने आएगा और एक पुस्तक लेगा, कम से कम शब्दों के रूप से? तो फिर, पुस्तक पृथ्वी पर न्याय और मोक्ष के माध्यम से अपना राज्य स्थापित करने की ईश्वर की योजना के प्रतीक के रूप में कार्य करती है।

इस प्रकार का अगला चित्र प्रकट होता है, यद्यपि देवदूत, यद्यपि वह एक महत्वपूर्ण भूमिका नहीं निभाता है, कम से कम प्रकाशितवाक्य 5 के शेष भाग में, अगला महत्वपूर्ण चित्र एक देवदूत है। और हम पहले ही सुझाव दे चुके हैं और इस तथ्य के बारे में बात कर चुके हैं कि देवदूत सर्वनाशकारी साहित्य का अभिन्न अंग हैं। आप यह भी सर्वनाश पढ़ते हैं, और आप स्वर्गदूतों को विभिन्न चीजें करते हुए और दृष्टा की दृष्टि के संदर्भ में सर्वनाश में विभिन्न भूमिकाएं निभाते हुए पाते हैं।

और आप प्रकाशितवाक्य में भी यही चीज घटित होते हुए देखते हैं। बाद में, हम देखेंगे कि एक देवदूत जान को कुछ चीजें दिखाने के लिए ले जा रहा है। जान अक्सर देवदूत प्राणियों के साथ बातचीत में रहता है।

दो बार, उसे एक देवदूत प्राणी के सामने झुकने और उसकी पूजा करने का प्रलोभन आया। लेकिन यहाँ स्वर्गदूत इस दृष्टि से जान को दिखाई देता है और वह अध्याय 5 की मुख्य समस्या को स्पष्ट करने की भूमिका निभाता है जैसे हल करना है। और इसलिए, देवदूत की आवाज़ एक प्रश्न के रूप में मुख्य समस्या को उठाती है।

और वह प्रश्न यह है, कि मुझें तोड़ने और पुस्तक खोलने के योग्य कौन है? तो, प्रश्न, मुद्दा यह है कि यहाँ ईश्वर ब्रह्मांड के सर्वशक्तिमान निर्माता के रूप में वर्णित है। पुस्तक उसके हाथ में है, वह पुस्तक जिसमें पृथ्वी पर अपना राज्य स्थापित करने, उद्धार और न्याय

लाने की उसकी योजना है। परमेश्वर उस पुस्तक को संप्रभु रूप से धारण कर रहा है।

और अब प्रश्न यह है कि संसार में ऐसा कौन है जो सर्वशक्तमिनि ईश्वर, जो समस्त ब्रह्माण्ड को सर्वशक्तमिनि रच्यता है, के दाहिने हाथ से पुस्तक लेकर उसे खोल सके, उसकी सामग्री परकट कर सके और उसे व्यवस्थित कर सके। सामग्री गति में? यही मुख्य प्रश्न है। और जब जान कहता है, जब देवदूत कहता है, कौन योग्य है, या जब जान कहता है, कौन योग्य है कि इसे खोलकर इसके अंदर देखे, तो विचार सिर्फ इसे पढ़ने का नहीं है, कि कोई इसे खोल देगा और इसे पढ़ेगा और इसे रोल करेगा बैक अप लें और कहें, ओह, यह दिलचस्प था, मैं आपको बताता हूँ कि यह किस बारे में था। विचार यह है कि इसे खोलकर और इसे पढ़कर, कोई इसकी सामग्री को परकट करने में सक्षम होता है और वास्तव में सकरॉल की सामग्री को गति में सेट करता है, जो पृथ्वी पर अपना राज्य स्थापित करने के लिए भगवान का उद्देश्य है।

इसलिए, इसे किसी अन्य पुस्तक की तरह केवल पढ़ा जाना नहीं है, बल्कि वास्तव में इसकी सामग्री को गति प्रदान करना है। अब, इस प्रश्न का उत्तर देने के प्रयास में, जान किसी योग्य व्यक्ति को खोजने के लिए ब्रह्मांड-व्यापी खोज पर निकल जाता है। फरि, प्रश्न यह है कि पुस्तक खोलने के योग्य कौन है? यही मुख्य प्रश्न है जिसका उत्तर यह अध्याय देता है।

यही मुख्य समस्या है जो उठाई गई है। हमें सहिसन पर बैठे व्यक्ति, ब्रह्मांड के संप्रभु निर्माता, जिसके दाहिने हाथ में पुस्तक है, जो अधिकार और शक्ति का प्रतीक है, के पास जाने और उसे लेने का अधिकार है, उसके पास जाने के लिए योग्य व्यक्ति किहां मिल सकता है? सकरॉल करें और फरि इसे खोलें और इसकी सामग्री को अधिनियमिति करें? इसलिए, जान ऐसा करने के लिए एक उपयुक्त व्यक्ति को खोजने के लिए ब्रह्मांड-व्यापी खोज पर निकल जाता है। यहां मुझे जो दिलचस्प लगता है वह यह है कि जान अपने स्वयं के दृष्टिकोण में भागीदार बन जाता है।

तो, वह अभी केवल एक दर्शन नहीं देख रहा है; वह वास्तव में अपने स्वयं के दृष्टिकोण में भागीदार बन जाता है, और वह एक यात्रा पर निकल जाता है; हालांकि पाठ हमें यह नहीं बताता है कि उसने ऐसा कैसे किया, पाठ केवल इतना कहता है कि वह पूरे ब्रह्मांड में एक ऐसे व्यक्ति के रूप में यात्रा पर जाता है जो सकरॉल खोल सकता है। और उनकी खोज का दायरा पूरी तरह से विस्तृत है। वह स्वर्ग में जाता है, सभी स्वर्गों में, जसिमें मैं इसे लेता हूँ, यह सहिसन कक्ष, स्वर्गीय सहिसन कक्ष।

वह सारे आकाश में जाता है, वह सारी पृथ्वी पर खोज करता है, और इसके अलावा, वह पृथ्वी के नीचे भी खोज करता है। दूसरे शब्दों में, इसका तात्पर्य यह है कि जान कोई कसर नहीं छोड़ता। किसी योग्य व्यक्ति की उनकी खोज पूरी तरह से संपूर्ण है।

मुद्दा यह भी नहीं है कि भौतिक और भौगोलिक दृष्टि से यह पता लगाया जाए कि ये स्थान कहाँ हैं। मुद्दा यह है कि यह सार्वभौमिक है और यह संपूर्ण है। ब्रह्मांड का पूरा दायरा, जसिमें स्वर्ग भी शामिल है, और मैं स्वर्गीय सहिसन, स्वर्गीय

सहिसन ककष को उठाता हूं, किसी ऐसे व्यक्तिको ढूंढने के लिए तोड़फोड़ की जाती है जो ऊपर जा सके और इस स्क्रॉल को ले सके, इसे खोल सके, और इसकी सामग्री को चालू कर सके।

और मैं ऐसा क्यों कहता हूं, यह भी महत्वपूर्ण है; यह बाकी दृष्टिको समझने के लिए महत्वपूर्ण होगा। यह महत्वपूर्ण है कि जॉन को स्वर्ग में कोई भी न मिला। स्वर्ग सभी प्रकार के उत्कृष्ट देवदूत प्राणियों से भरा है, लेकिन जॉन को स्वर्ग में कोई भी नहीं मिला।

इन सभी देवदूत प्राणियों में, चौबीस बुजुर्गों और चार जीवित प्राणियों की तरह और जो भी अन्य श्रेष्ठ, शक्तिशाली, देवदूत प्राणी स्वर्गीय कक्षों में मौजूद हैं, जसिमें ब्रह्मांड के अन्य सभी स्वर्गीय हसिसे भी शामिल हैं, जॉन को ऐसा कोई नहीं मिला जो योग्य हो, यहां तक कि स्वर्ग में भी जहां आप किसी को ढूंढने की उम्मीद कर सकते हैं। कोई पृथ्वी पर, या स्वर्ग में, या पृथ्वी के नीचे उम्मीद नहीं कर सकता है, लेकिन स्वर्ग में भी जहां कोई व्यक्ति किसी ऐसे व्यक्ति को खोजने की उम्मीद कर सकता है जो इतना शक्तिशाली और योग्य है कि वह पुस्तक खोल सके, जॉन को ऐसा कोई नहीं मिला जो इसे खोल सके। तीन बार ध्यान दें कि जॉन इस बात पर जोर देता है कि कोई भी उस पुस्तक को खोलने के योग्य नहीं था।

उसे कोई ऐसा व्यक्ति नहीं मिला जो परमेश्वर के दाहिने हाथ से पुस्तक लेने, उसकी मुहरें खोलने और उसकी सामग्री को चालू करने के लिए उपयुक्त और उपयुक्त हो। और उसके कारण, हमें बताया गया कि जॉन रोता है और रोने लगता है। और यहां ग्रीक में निर्माण काफी गहन है।

तो, यह सिर्फ जॉन का कोने में रोने जैसा मामला नहीं है। यह पूरी तरह रोना-पीटना है, निराशा है क्योंकि उसे पुस्तक खोलने वाला कोई नहीं मिला रहा है। एक तरह से, जॉन घबरा रहा है क्योंकि उसे कोई ऐसा व्यक्ति नहीं मिला रहा है जो स्क्रॉल खोल सके।

और मेरा प्रश्न, मैं हमेशा इस पाठ को पढ़ता हूं, मुझे आश्चर्य होता है कि ऐसा क्यों है? क्योंकि मैं इसे एक तरह से सर्वनाशकारी साहित्य के अवशेष के रूप में देखता हूं। बस यही होता है। कहानी में कुछ रहस्य और दिलचस्पी जोड़ने के लिए जॉन रोता है।

लेकिन जब आप इसके बारे में सोचते हैं, तो जॉन क्यों रोता है? यदि इस पुस्तक में अपना राज्य स्थापित करने और न्याय तथा मोक्ष लाने की ईश्वर की योजना शामिल है, यदि जॉन को पुस्तक खोलने के लिए कोई नहीं मिला, और फिर, उसे नहीं मिला, तो उसने ब्रह्मांड के हर कोने में खोजा और कोई नहीं मिला एक योग्य। यदि उसे कोई योग्य व्यक्ति नहीं मिला, तो परमेश्वर के लोगों के लिए कोई मुक्ति नहीं है। यदि जॉन को कोई योग्य व्यक्ति नहीं मिला, तो परमेश्वर के उन लोगों के लिए कोई समर्थन नहीं है जो पीड़ित हैं।

यदि ईश्वर नहीं मिल सकता, यदि जॉन किसी को योग्य नहीं पा सकता, तो इस पृथ्वी पर कोई न्याय नहीं है। यदि जॉन को कोई योग्य व्यक्ति नहीं मिला, तो चर्च की पीड़ा पूरी तरह से व्यर्थ है और उनका बलदान, यहां तक कि जो मौत के लिए बलदान देते हैं, वह भी व्यर्थ है। यदि जॉन को कोई योग्य व्यक्ति नहीं मिला, तो परमेश्वर के लोगों के लिए कोई आशा नहीं है।

दुनिया में कोई न्याय नहीं है। परमेश्वर के लोगों के लिए कोई मुक्ति नहीं है। और इसलिए, जॉन रोता है, और कोई आश्चर्य नहीं कि वह रोता है।

अध्याय 4 में जनि 24 बुजुर्गों से हमारा परिचय कराया गया था उनमें से एक ने अच्छी खबर के

साथ जॉन के रोने को रोका। अर्थात कोई तो योग्य मलि गया है। कोई तो है जो पुस्तक खोलने के योग्य है।

और यही वह व्यक्ति है जिसे 24 बुजुर्ग, 24 बुजुर्गों में से एक, यहूदा जनजात के शेर के रूप में पेश करते हैं। अब, मैं यहां जसि बात पर जोर देना चाहता हूं, क्या यह महत्वपूर्ण हो जाएगा, क्या जॉन केवल इसके बारे में सुनता है। बुजुर्ग ने भाषण में जॉन से कहा कि वहां कोई है।

इसलिए, जॉन ने अभी तक इस व्यक्ति को नहीं देखा है। बुजुर्ग बस इतना कहते हैं कि कोई योग्य व्यक्ति है। यह यहूदा के गोत्र का सहि है।

उत्पत्ति अध्याय 49 और श्लोक 9, और यशायाह अध्याय 11 और श्लोक 1 से पुराने नियम की कल्पना का उपयोग करते हुए, मसीहा के गोत्र की यह कल्पना, यहूदा के शेर से राजा, और एक शेर भी। स्वर्गदूत कहता है, यह वही सहि है, जो दाऊद के वंश का यहूदा के गोत्र का है। पुनः यशायाह का एक विषय।

इस व्यक्ति ने वजिय प्राप्त की है या उस पर वजिय प्राप्त कर ली है, उसी शब्द का प्रयोग चरच पर वजिय पाने के अध्याय 2 और 3 में किया गया है। अब, यहूदा जनजात का यह शेर, जो मसीहा के रूप में यीशु का स्पष्ट संदर्भ है, ने आपके अंग्रेजी अनुवाद के आधार पर जीत हासिल की है, जीत हासिल की है या जीत हासिल की है। और इसलिए, वह संक्षम है, क्योंकि उसने जीत हासिल कर ली है, वह इसकी सामग्री को प्रकट करने के लिए स्क्रॉल, स्क्रॉल और सात मुहरों को खोलने में संक्षम है।

अब, यह दलित्सुप है कि लेखक ने हमें इस बिंदु पर विशेष रूप से यह नहीं बताया कि यहूदा के गोत्र के शेर ने कैसे वजिय प्राप्त की। किसी की शक्ति और शक्ति के प्रदर्शन की उम्मीद होगी, शायद सैन्य शक्ति, जैसे कि एक शेर के रूप में और यहूदा के गोत्र से चित्रित किया गया हो। और इसलिए जैसा कि कोई, शायद इसे पढ़कर उम्मीद कर सकता है, उसने शक्ति और शक्ति के प्रदर्शन के माध्यम से वजिय प्राप्त कर ली होगी।

इसलिए, वह अब काबू पाने में संक्षम है, या वह अब ईश्वर के दाहिने हाथ से पुस्तक को छीनने में संक्षम है ताकि इसकी सामग्री को प्रकट करने और सामग्री को गर्त में स्थापित करने के लिए इसकी मुहरें हटा सकें। और वह, फिर से, एक अनुसमारक के रूप में, पुस्तक में पृथ्वी पर अपना राज्य स्थापित करने, मोक्ष और न्याय लाने की भगवान की योजना शामिल है। इस प्रकार जो कुछ है वह प्रकाशतिवाक्य की पुस्तक में सबसे बड़े विरोधाभासों में से एक है, यदि संपूर्ण नए नियम में नहीं और शायद संपूर्ण बाइबिल में नहीं।

बुजुर्ग ने भाषण के माध्यम से जॉन का परिचय दिया है, बस उससे संवाद किया है और उसे बताया है कि कोई है, यहूदा के गोत्र से एक शेर है, डेविड की जड़, जो संक्षम है, जो पहले ही जीत चुका है, शायद सेना के विचारों को प्रेरित कर रहा है वजिय और पराक्रम। यह व्यक्ति जीत गया है और जॉन ने यही सुना है। अब जो होता है वह यह है कि जॉन आगे जो देखता है वह यहूदा के गोत्र से एक वजियी शेर के अलावा कुछ भी नहीं है।

इसके बजाय, जब जॉन मुड़ता है, तो वह देखता है कि एक मेमना मारा हुआ खड़ा है। उसे एक मेमना दिखाई देता है जो ऐसा लगता है मानो उसका वध कर दिया गया हो। तथ्य यह है कि शब्दों के रूप से पाठ कहता है कि यह वध के रूप में प्रतीत होता है, इसका मतलब यह नहीं है कि जॉन को यह मतलब नहीं है कि ऐसा लग रहा था कि उसने वध किया है, लेकिन वास्तव में उसने ऐसा नहीं किया था।

अधिक संभावना है कि उसका मतलब यह है कि मेमना ऐसा दखिता है मानो उसका वध कर दिया गया था क्योंकि विह वास्तव में किया गया था, लेकिन अब वह जॉन के सामने जीवित खड़ा है, लेकिन वह अभी भी ऐसा दखिता है जैसे कि उसका वध किया गया था क्योंकि विह वास्तव में किया गया था। इसलिए, जॉन सवाल नहीं उठा रहा है, कह रहा है कि ऐसा लगता है जैसे उसका वध कर दिया गया या मार दिया गया, लेकिन वास्तव में ऐसा नहीं हुआ था। लेकिन जो दलिचस्प है वह जॉन और समाधान सुनने के बीच वरिधाभास या तनाव है।

समाधान यह है कि जॉन सुनता है कि यहूदा के गोत्र का एक शेर है जिसने जीत हासिल की है, लेकिन जब वह यहूदा के गोत्र के शेर को देखने के लिए मुड़ता है, तो उसे कोई शेर नहीं दखिता; वह ठीक इसके विपरीत देखता है। वह एक मेमना देखता है और, इसके अलावा, एक मेमना देखता है जैसे मार दिया गया है या वध कर दिया गया है। संभवतः इसकी पृष्ठभूमि निरिगमन के फसह के मेमने के साथ-साथ यशायाह अध्याय 53 से पीड़ित सेवक, वह मेमना भी है जिसका वध किया गया था।

लेकिन वरिधाभास चौंकाने वाला है। एक शेर जो अब मेमने जैसा दखिता है। यह एक महत्वपूर्ण होगा, वास्तव में एक महत्वपूर्ण संदिग्ध का परिचय देता है जिसमें हम प्रकाशितवाक्य में केही और देखने जा रहे हैं और वास्तव में हमें मदद मिलेगी, मुझे लगता है, रहस्योद्घाटन में कुछ अन्य स्थानों को समझने में जो विवादित रहे हैं कि आप उनकी व्याख्या कैसे करते हैं, और वह यह है।

फिर से, ब्रिटिश विद्वान रचिरड बाउकॉम ने इस विषय को उजागर करने और इसके महत्व को दखाने के लिए किसी और से अधिक काम किया है और रहस्योद्घाटन के लिए यह समझना महत्वपूर्ण है कि जॉन जो सुनता है और जॉन जो देखता है, उसके बारे में आपको अक्सर रहस्योद्घाटन में एक तुलना मिलती है। कई बार जॉन कुछ सुनता है जिसके तुरंत बाद जॉन देखता है, और अक्सर, वह जो देखता है वह एक अलग कोण से व्याख्या करता है जो उसने सुना था। और इसलिए यहां, जॉन जो सुनता है वह यहूदा के गोत्र का एक शेर है जो जीतता है लेकिन जो वह देखता है वह कुछ नहीं है, इसलिए ये दो अलग-अलग संस्थाएं या दो अलग-अलग व्यक्तियाँ नहीं हैं।

वह एक ही चीज को अलग-अलग दृष्टिकोण से देखता है, लेकिन जो वह देखता है उसका अर्थ यह हो जाता है कि उसने क्या सुना था। उसने सुना कि यहूदा के गोत्र का एक सहि है जो जीत गया है, परन्तु जब वह देखने के लिए मुड़ता है, तो उसे यहूदा का सहि नहीं दखिता; वह एक मेमने को देखता है जो मारा गया है। तो, सवाल यह है कि मेमने ने कैसे वजिय प्राप्त की है? यहूदा के गोत्र का सहि कैसे पराजित हुआ? यह मेमना पुस्तक लेने के योग्य कैसे है? यह उसकी पीड़ा और मृत्यु के माध्यम से है।

अर्थात्, परमेश्वर ने कैसे वजिय प्राप्त की है और वजिय प्राप्त की है, और मेमने ने कैसे वजिय प्राप्त की है? वह अपनी पीड़ा और मृत्यु पर वजिय प्राप्त करता है। वह अपने बलदान के माध्यम से, और मेमने की मृत्यु और पुनरुत्थान के कारण वजिय प्राप्त करता है, क्योंकि

वह वही है जो मर चुका है और अब जीवति है, वह पुस्तक लेने और उसकी मुहरें खोलने और उसकी सामग्री को प्रकट करने के योग्य है, कुछ ऐसा जो कोई और नहीं कर सकता था, इसलिए घटनाओं को गति दी गई। तो, रोमन साम्राज्य के विपरीत, ऐसा लगता है जैसे जॉन वजिय का एक वैकल्पिक दृष्टिकोण प्रस्तुत करना चाहता है।

रोमन साम्राज्य को तलवार से जीता गया, उन्होंने हिसा से जीता, उन्होंने सैन्य शक्ति से और अपने साम्राज्य का विस्तार करके जीता। अब, इसके विपरीत, जॉन वजिय का एक दृष्टिकोण प्रस्तुत करता है जो पूरी तरह से इसके विपरीत है। अर्थात्, यीशु मसीह अपने कष्ट, मृत्यु और अपने बलिदान के माध्यम से वजिय प्राप्त करते हैं और यह उनका पुनरुत्थान है जो उन्हें सही ठहराता है।

तो, यह उसे पुस्तक लेने के योग्य बनाता है। और वास्तव में, यह इस बात का भी एक मॉडल बन जाता है कि उसके चर्चों पर कैसे काबू पाना है। तो, फरि से, अध्याय 2 और 3 में, उन लोगों से एक वादा किया गया था जो वजिय प्राप्त करेंगे।

उन पर काबू कैसे पाया गया? उन्हें कैसे जीतना और वजिय होना था? उसी प्रकार मेमना भी अपने विश्वासयोग्य कष्ट सहते हुए गवाही देता है। और अपने वफादार बलिदानी साक्ष्य के माध्यम से, चर्च उसी तरह से जीत हासिल करेगा जैसे मेमना करता है। फरि आगे क्या होगा? फरि से, आपको क्रिया की कई क्रियाएं, सूचक क्रियाएं मिलनी शुरू हो जाती हैं जो कहानी और दृश्य को साथ लेकर चलती हैं।

मुझे लगता है कि शिलोक 7 में हम पाते हैं कि अध्याय 5 का चरमोत्कर्ष क्या है। हर चीज इसी ओर ले जा रही है। अंततः 7 में मेमना; आया और उस ने जो सहिसन पर बैठा था, उसके दाहिने हाथ से पुस्तक ले ली। यह सीन का क्लाइमेक्स है।

वास्तव में, ली गई क्रिया का क्रिया काल ग्रीक में पूर्ण काल कहलाता है, जो उन काल में से एक है जिसका उपयोग लेखक किसी गतिविधि को अग्रभूमि में करने के लिए कर सकता है, ताकि उसे बाकी सभी चीजों से अलग किया जा सके। और जॉन इस क्रिया के ग्रीक में पूर्ण काल के रूप का उपयोग करके बिल्कुल यही कर रहा है। जॉन चाहता है कि यह बात कायम रहे।

यह चरमोत्कर्ष है। यह अध्याय 5 का केंद्रबिंदु है। संपूर्ण दृष्टिकोण इसी ओर ले जा रहा है। यह देवदूत द्वारा उठाई गई समस्या का समाधान है।

स्क्रॉल कौन ले सकता है? यहाँ वह है। वह मेमना जो अपनी बलि के द्वारा मारा गया और जीता गया, अब आने और उसके दाहिने हाथ से पुस्तक लेने के योग्य है जो सहिसन पर बैठा है। अब, मुझे लगता है कि इससे जो प्रश्न उठता है, उनमें से एक यह है कि वह कौन है जो सहिसन पर बैठे व्यक्ति के पास जा सकता है और उसके हाथ से पुस्तक छीन सकता है? याद रखें, यह सर्वोच्च ईश्वर है जो सहिसन पर बैठा है, जिसके हाथों में न्याय और मोक्ष के लिए पृथ्वी पर अपना राज्य स्थापित करने की योजना है।

कौन सीधे ऊपर चलकर उसके हाथ से पुस्तक छीन सकता है? ऐसा करने के लिए कौन योग्य और उपयुक्त है? और यह भी ध्यान दें कि यह दलिचस्प है कि मेमना, और यह उस चीज से संबंधित है जिसका हमने पहले उल्लेख किया है, यह दलिचस्प है कि मेमना

एक तरह से सहिसन से बाहर आता है। आप अचानक नहीं देखते हैं, जैसा कि आप विज्ञान कथा फ़िल्मों या कुछ इसी तरह के कुछ दलितचित्र दृश्यों में देखते हैं, आप भीड़ को अलग होते और किसी योद्धा को सहिसन की ओर बढ़ते हुए नहीं देखते हैं। आप मेमने को बाहर से आते हुए नहीं देखते हैं या बस, आप जानते हैं, ओह, मुझे वहाँ खड़े उस व्यक्ति की याद आती है।

और फिर मेमना आता है और सहिसन कक्ष में प्रवेश करता है। इसके बजाय, मेमना सहिसन के केंद्र से निकलता है। वह बाहर से नहीं आता।

इसके अलावा, हम पहले ही कह चुके हैं, याद रखें, जॉन ने स्वर्ग सहति हर जगह देखा है। तो, ऐसा नहीं है कि यह वह व्यक्ति है जिसे जॉन ने मसि कर दिया। जॉन ने पूरे स्वर्ग में देखा और उसे नहीं मिला, और ओह, यहाँ, इसे इस तरह प्रस्तुत नहीं किया गया है जैसे, ओह, वह मेमने से चूक गया।

किसी तरह, वह मेमने को देखने में असफल रहा। नहीं, उसे हर जगह देखा गया है। उसने पूरे आकाश में खोजा और उसे कोई नहीं मिला।

तो, इससे सवाल उठता है कि वह कौन व्यक्ति है जो सहिसन तक चल सकता है और सहिसन पर बैठे व्यक्ति के दाहिने हाथ से पुस्तक ले सकता है? और यह कौन व्यक्ति है जो सहिसन से बाहर आता है जब जॉन पहले से ही पूरे स्वर्ग में देख चुका है, और यहाँ तक कि सबसे ऊँचा स्वर्गदूत भी स्क्रॉल लेने के योग्य नहीं है? यह कौन व्यक्ति है जो सहिसन से बाहर आता है और अब सहिसन पर बैठे व्यक्ति के दाहिने हाथ से पुस्तक लेता है? मुझे लगता है कि मुद्दा यह है कि यह कोई सामान्य आंकड़ा नहीं है। यह वह व्यक्ति है जो ब्रह्मांड में किसी भी अन्य से महान है। यहाँ तक कि सर्वोच्च, सर्वोच्च और सबसे शक्तिशाली देवदूत प्राणी, यह कोई और नहीं बल्कि स्वयं ईश्वर है।

यह ईश्वर और समस्त सृष्टि के बीच विभाजन करने वाला व्यक्ति है। यह व्यक्ति विभाजन के ईश्वरीय पक्ष पर खड़ा है। यह वह व्यक्ति है जो ईश्वर के अस्तित्व को साझा करता है।

यह वह व्यक्ति है जो अद्वितीय है और कोई और नहीं बल्कि स्वयं ईश्वर है, जैसा कि मुझे लगता है कि प्रकाशतिवाक्य अध्याय 5 का शेष भाग प्रदर्शित करेगा। लेकिन अब जब महत्वपूर्ण घटना घट चुकी है, और दुविधा सुलझ गई है, तो पुस्तक खोलने के योग्य कौन है? अब जबकि किसी को योग्य पाया गया है, लेकिन वडिबना यह है कि उसकी बलदिनी मृत्यु और पुनरुत्थान के माध्यम से, और अब जब स्क्रॉल लेने की घटना हुई है, अब दुविधा हल हो गई है, अब हम शेष अध्याय के लिए तैयार हैं जहाँ स्वर्ग इस अनोखी घटना का जवाब देने जा रहा है। अगली बार, हम मेमने द्वारा पुस्तक लेने और उसे खोलने और उसकी सामग्री को अधिनियमिति करने की तैयारी करने पर स्वर्ग की प्रतिक्रिया को देखेंगे।

यह रहस्योद्घाटन की पुस्तक पर अपने पाठ्यक्रम में डॉ. डेव मैथ्यूसन हैं। यह सत्र 9 है, प्रकाशतिवाक्य 4 और 5 जारी है।